Knowledgeable Research –Vol.1, No.4, *November 2022*

Web: http://www.knowledgeableresearch.com/

"अभिज्ञानशाकुन्तल का काव्य-सौष्ठव"

डॉ. बैकुण्ठ नाथ शुक्ल
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,संस्कृत विभाग
ने.मे.शि.ना.दास कॉलेज,बदायूँ
ईमेल : anubaikunth.7375@gmail.com

****

शोध सार : *कालिदास संस्कृत साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवियों में से एक हैं, जिनकी रचनाओं में सरलता, प्रसाद गुण, भावगाम्भीर्य और कल्पनाशीलता का अनूठा संगम देखने को मिलता है। उनकी शैली में वैदर्भी रीति के प्रसाद और माधुर्य गुणों की प्रधानता है, जबकि ओज गुण कम मात्रा में उपस्थित है। उनकी भाषा सहज, सरस और अलंकारों के बोझ से मुक्त है, जिसमें शब्दचयन की निपुणता एवं भावाभिव्यक्ति की सूक्ष्मता झलकती है। कालिदास ने 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' जैसे ग्रंथों में प्रकृति चित्रण, चरित्र-वर्णन और भावनाओं की गहन अभिव्यक्ति को सजीव बना दिया है। उनके श्लोकों में भावुकता, व्यंग्य और संक्षिप्तता के साथ-साथ ध्वन्यात्मकता भी विद्यमान है। शकुन्तला के सौंदर्य, दुष्यन्त के मृगया प्रसंग और गन्धर्व विवाह जैसे अंशों में उनकी वर्णन कला अद्वितीय है। कालिदास की काव्य-शैली संक्षिप्त होते हुए भी गहन अर्थवत्ता से परिपूर्ण है, जो पाठकों एवं श्रोताओं को तत्क्षण प्रभावित करती है*

मुख्य शब्द: *कालिदास, संस्कृत साहित्य,वैदर्भी रीति,प्रसाद गुण,माधुर्य गुण*

****

कविकुलभूषण कालिदास संस्कृत वाङ्मय के सर्वमान्य कविरत्न हैं। उनकी लोकप्रियता का प्रमुख कारण सरल, सहज, परिष्कृत और प्रसादगुण युक्त शैली है। कालिदास की लेखनी में कल्पना की अनन्त उड़ान के साथ-साथ भावों की गम्भीरता, विचारों में घनीभूत अनुभूति के साथ-साथ भाषा में लोच और प्राञ्जलता, कविता में मनोज्ञता और मादकता के साथ-साथ कथानक में सुविचारित घटना-संयोजन, बाह्य प्रकृति के स्थूल विश्लेषण के साथ-साथ अन्तः प्रकृति का सूक्ष्म दर्शन, चरित्र-चित्रण में व्यक्तिकेन्द्रित शैली के साथ-साथ शब्दचयन में नीरक्षीर-विवेक एवं वर्णनों में अलङ्कारों के बोझिल वातावरण से से पृथक् नैसर्गिक सुषमा की छटा स्पष्ट परिलक्षित होती है।

कालिदास वैदर्भी रीति के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। उनकी सृजन-शैली में प्रसाद और माधुर्य गुणों का प्राधान्य है। ओज गुण न्यून मात्रा में मिलता है। कुछ श्लोक इतनी प्रसादमयी भाषा-शैली में लिखित हैं कि वे कि वे पाठक या श्रोता के सद्यः प्रभावी हो जाते हैं। जैसे- परोपकार के स्वरूप का वर्णन करते हुए वे कह रहे हैं-

"भवन्ति नम्रास्तरवः फलागमै,
र्नवाम्बुभिर्दूरविलम्बिनो घनाः।
अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः;
स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्।।"
(अभि.5/12)

माधुर्य गुण पर भी कालिदास का प्रचुर हस्तक्षेप है कवि की शकुन्तला के सुकुमार-सौन्दर्य पर अत्यन्त अनुग्रह-दृष्टि है।उसके लिए यह असह्य है कि शकुन्तला जैसी सुकुमारी वृक्ष-सेचन और तपस्या जैसा कठोर श्रम करे। कविवर कालिदास अपने विद्रोह भाव को कितने मधुर शब्दों में व्यक्त करते हैं

Received Date: 07.11.2022, Acceptance Date: 26.11.2022, Publication Date:30.11.2022

"इदं किलव्याजमनोहरं वपुः,
तपःक्षमं साधयितुं य इच्छति।
ध्रुवं स नीलोत्पलपत्रधारया;
शमीलतां छेत्तुमृषिर्व्यवस्यति।।" (अभि.1/18)

ओज गुण यद्यपि कम मात्रा है, तथापि कुछ स्थलों पर ओज गुण का सुन्दर समावेश किया गया है। दुष्यन्त के रथ और सेना को देखकर भयभीत हाथियों के भागने से वन के वृक्ष टूट गये हैं और उसका एक दाँत वृक्ष की शाखा में फँस गया है। देखिए-

"तीव्राघात-प्रतिहत-तरुस्कन्ध-लग्नैक-दन्तः,
पादाकृष्ट-व्रतति-वलयासङ्ग-सञ्जात-पाशः।
मूर्त्तो विघ्नस्तपस इव नो भिन्नसारङ्गयूथो;
धर्मारण्यं प्रविशति गजः स्यन्दनालोकभीतः।।"

(अभिज्ञानशाकुन्तलम्-1/30)

कालिदास क भभाषा कितनी सरल, सरस और मनोरम है। उन्होंने लम्बे समासों के बोझिल प्रयोग का सर्वथा परित्याग किया है। शुकन्तला के नैसर्गिक सौन्दर्य का यथार्थ चित्रण कितनी सहज पदावली में किया हैदेखिए-

"अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहै,
रनाविद्धं रत्नं मधु नवमनास्वादितरसम्।
अखण्डं पुण्यानां फलमिव च तद्रूपमनघं;
न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः।।"

(अभिज्ञानशाकुन्तलम्-2/10)

अर्थात्, "शकुन्तला का निष्कलङ्क सौन्दर्य अभी तक किसी के द्वारा न सूँघा गया पुष्प है, नाख़ूनों से न खुरचा हुआ नवीन किसलय है, न विंधा हुआ रत्न है और न चखा हुआ नव मधु है। ऐसा प्रतीत होता है कि उसके जन्म-जन्मान्तर के अखण्ड पुण्यराशि का फल है। पता नहीं विधाता किसे इसका भोक्ता बनाएगा?"

कालिदास का भाषा, भाव ,शैली और कथावस्तु पर असाधारण अधिकार झहै। उनकी भाषा परिष्कृत और सुसंस्कृत है। उनका शब्दकोष अगाध है। वे प्रत्येक स्थान पर भाषा, भाव और कथानक के अनुकूल ही शब्दों का प्रयोग करते हैं। जैसे-

"चित्रे निवेश्य परिकल्पितसत्त्वयोगा,
रूपोच्चयेन मनसा विधिना कृता नु।
स्त्रीरत्नसृष्टिरपरा प्रतिभाति सा मे।
धातुर्विभुत्वमनुचिन्त्य वपुश्च तस्याः।।"

(अभिज्ञानशाकुन्तलम्-2/9)

कालिदास की शैली संक्षिप्त और ध्वन्यात्मक है। उनकी व्यञ्जना को समझना सहृदय की सहृदयता और तन्मयता पर निर्भर है। राजा अपनी प्रेयसी शकुन्तला को देखकर अपना हर्षातिरेक केवल एक वाक्य में प्रकट करता है- **"अये! लब्धं मे नेत्रनिर्वाणम्" (अरे! मेरे नेत्रों को चरम आनन्द प्राप्त हो गया, अभिज्ञानशाकुन्तलम्- अंक 03,वाक्य 02)**। शकुन्तला भी अपना प्रेम-पत्र एक श्लोक में पूर्ण कर देती है कि,**"मैं तुम्हारे हृदय के भाव नहीं जानती, किन्तु तुम्हारे बिना मैं शून्य हूँ। मेरा हृदय तुम्ओर लगा हुआ है और कामदेव मेरे अङ्गों को दिन-रात तपा रहा है।"**

इस प्रसङ्ग को देखिए-

"तव न जाने हृदयं मम पुनः कामो दिवापि रात्रावपि।
निर्घृण तपति बलीयस्त्वयि वृत्तमनोरथाया अङ्गानि।।"

(अभिज्ञानशाकुन्तलम्-3/13)

राजा और शकुन्तला दोनों गन्धर्व विवाह के बाद लता-मण्डप में बैठे हैं। माता गौतमी अस्वस्थ शकुन्तला को देखने आ रही हैं।

Received Date: 07.11.2022, Acceptance Date: 26.11.2022, Publication Date:30.11.2022

दोनों को पृथक् करने के लिए कितना मर्यादित और व्यङ्ग्यात्मक सङ्केत किया गया है। देखिए-**"चक्रवाकवधुके! आमन्त्रयस्व सहचरम्। उपस्थिता रजनी"** अर्थात्, **"हे चक्रवाकवधु (चकवी)! अपने साथी से विदा लो, अब रात हो आयी है" (** अभिज्ञानशाकुन्तलम् अंक 03,वाक्य 74)। कालिदास की घटना-वर्णन-चातुरी अद्भुत एवं असाधारण है। प्रत्येक वस्तु एवं घटना का वे सजीव वर्णन करते हैं। वे प्रकृति के जीवन्त चित्रण में परम पटु हैं। उनके वर्णन इतने सजीव होते हैं कि आँखों के समक्ष कथावस्तु मूर्तरूप-सी हो जाती है। दुष्यन्त द्वारा पीछा किए जाते हुए मृग का कितना स्वाभाविक वर्णन किया गया है-

"ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने दत्तदृष्टिः,
पश्चार्धेन प्रविष्टः शरपतनभयाद्भूयसा पूर्वकायम्।
दर्भैरर्धावलीढैः श्रमविवृतमुखभ्रंशिभिः कीर्णवर्त्मा;
पश्योदग्रप्लुतत्वाद् वियति बहुतरं स्तोकमुर्व्यां प्रयाति।।"

(अभिज्ञानशाकुन्तलम्-1/7)

कालिदास ने शाकुन्तल में लगभग सभी प्रचलित अलङ्कारों का प्रयोग किया है अलङ्कार श्रमसाध्य न होकर सहज, स्वाभाविक और घटना-सापेक्ष हैं। वे कथानक को सरस और सहृदय-ग्राह्य बनाने में सहायक हैं। महाकवि कालिदास अपनी उपमा को लेकर लोक-विश्रुत हैं। उपमा उनके लिए अलङ्कार मात्र न होकर काव्यात्मा ग्रहण कर चुकी है। अन्य कवियों की अपेक्षा कालिदास की उपमा कुछ विशेष है। कालिदास की उपमा में लिङ्गसाम्य और औचित्य आदि का पूरा ध्यान रखा गया है। यद्पि उपमा के प्रयोग **रघुवंशम्** में सर्वाधिक हुए हैं तथापि शाकुन्तल की समृद्धि भी, उपमा को लेकर कम नहीं है। उपमा के कुछ रोचक स्थल देखने योग्य हैं। यथा-

"अधरः किसलयरागः कोमलविटपानुकरिणौ बाहू।
कुसुममिव लोभनीयं यौवनमङ्गेषुश सन्नद्धम्।।"

अभिज्ञानशाकुन्तलम्-1/21)

''शकुन्तला के अधर किसलय जैसी लालिमा लिए हुए है; दोनों भुजाएँ कोमल शाखा के तुल्य हैं और उसके अङ्गों में पुष्प-सा लोभ उत्पन्न कर देने वाला यौवन व्याप्त है।" शकुन्तला के प्रति आसक्त राजा के चित्त की क्या ही सुन्दर उपमा दी गई है। देखिए- **शरीर आगे की ओर जा रहा है और मन ठीक वैसे ही पीछे की ओर दौड़ रहा है,जैसे हवा के विपरीत ले जाया जाता हुआ ध्वजा का वस्त्र-**

"गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः।
चीनांशुकमिव केतोः प्रतिवातं नीयमानस्य।।"

(अभिज्ञानशाकुन्तलम्-1/34)

ऋषि कण्व अपनी धर्म-पुत्री शकुन्तला को आशीर्वाद देते हैं कि तेरा पुत्र सूर्य के समान तेजस्वी हो-

"**अभिजनवतो भर्तुः श्लाघ्ये स्थिता गृहिणीपदे,**
विभवगुरुभिः नित्यैस्तस्य प्रतिक्षणमाकुला।
तनयमचिरात् प्राचीवार्कं प्रसूय च पावनम्;
मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि।।"(अभि.4/19)

कुछ विद्वानों का मत है कि कालिदास ने उपमा का वैसा सुन्दर प्रयोग नहीं किया, जैसा कि अर्थान्तरन्यास का। इसी प्रसङ्ग में किसी कवि का मत है कि-

"उपमा कालिदासस्य नोत्कृष्टेति मतं मम।
अर्थान्तरस्य विन्यासे कालिदासो विशिष्यते।।"

अर्थान्तरन्यास के कुछ रोचक स्थल इस प्रकार हैं-

"बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः"(अभि.1/2)।

"भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र"(अभि. 1/16)।

Received Date: 07.11.2022, Acceptance Date: 26.11.2022, Publication Date:30.11.2022

"किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाऽऽकृतीनाम्(अभि.1/20)।

"सतां हि सन्हपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः"(अभि.1/22)।

"कामी स्वतां पश्यति"(अभि.2/2)।

गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति"(अभि.4/16)।

इस प्रकार कवि कालिदास ने अर्थान्तरन्यास का भी प्रचुर प्रयोग किया है। कालिदास की छन्दो-योजना भी विलक्षण है। उन्होंने शाकुन्तल में 24 प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया है। छोटे छन्दों का प्रयोग अधिक एवं बड़े छन्दों का प्रयोग कम है। महाकवि कालिदास के अन्य नाटकों को देखने से पता चलता है कि उन्हें **आर्या** और **अनुषटुप्** छन्द विशेष प्रिय हैं। छन्दों का प्रयोग भी कवि ने भाव और कथानक के अनुकूल किया है। जहाँ तक प्राकृतों के प्रयोग की बात है, तो कालिदास ने शाकुन्तल में गद्य के लिए शौरसेनी प्राकृत का प्रयोग किया है। षष्ठ अंक में दोनों सिपाही और धीवर मागधी बोलते हैं। राजा का साला कोतवाल शौरसेनी प्राकृत बोलता है। उच्च श्रेणी के सभी पुरुष पात्र साधारणतया संस्कृत बोलते हैं और स्त्रियाँ एवं निम्न श्रेणी के पुरुष पात्र प्राकृत बोलते हैं।

महाकवि कालिदास लोकरञ्जन एवं लोक-कल्याण के पक्षधर हैं। इसे वे बहुत उत्तरदायित्व और गम्भीरता के साथ व्यक्त करते हैं। उनका अभिमत है कि- **"राजा प्रजा के हितार्थ प्रयत्नशील हों; ज्ञान-गरिष्ठ कवियों की वाणी का पूर्ण सम्मान हो और सर्वशक्तिमान् स्वयम्भू शिव मेरे भी पुनर्जन्म को निवृत्त करें।"** देखिए-

" प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः,
सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम्।
ममापि च क्षपयतु नीललोहितः;
पुनर्भवं परिगतशक्तिरात्मभूः।।"

(अभिज्ञानशाकुन्तलम्-6/35)

यह कालिदास की अपने लिए प्रार्थना है। इससे ज्ञात होता है कि कालिदास शिवभक्त थे।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि महाकवि कालिदास बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न थे। उनमें असाधारण कवित्व-शक्ति का नवनवोन्मेष विद्यमान है। उनके काव्य न तो पुराणों की भाँति अनावश्यक विस्तार से बोझिल और शिथिल हैं न ही परवर्ती कवियों की तरह पाण्डित्य प्रदर्शन कारण क्लिष्ट। उनकी कृतियों मे कविता और कवित्व का उच्च आदर्श विद्यमान है। उनकी कविता प्रकृति के साथ तादात्म्य का अनुभव कराने वाली है। महाकवि कालिदास मानव मनोविज्ञान के सूक्ष्म द्रष्टा होने के साथ-साथ मानव और प्रकृति के अनादि सम्बन्ध के उपदेशक भी हैं। उनकी कविता में अलौकिक आनन्द भौतिक विलास, विलक्षण दिव्यता की अनुभूति, मानवीय भावों की मनोज्ञता और सात्त्विक सम्मोहन, ये सब कुछ विद्यमान हैं।

Received Date: 07.11.2022, Acceptance Date: 26.11.2022, Publication Date:30.11.2022